



Pranjal jain

23 Nov 2007

12:50 AM

Gwalior

Model: Web-MyKundli

Order No: 120876001

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 22-23/11/2007
दिन _____: गुरु-शुक्रवार
जन्म समय _____: 00:50:00 घंटे
इष्ट _____: 45:22:40 घटी
स्थान _____: Gwalior
राज्य _____: Madhya Pradesh
देश _____: India

अक्षांश _____: 26:12:00 उत्तर
रेखांश _____: 78:09:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:17:24 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 00:32:36 घंटे
वेलान्तर _____: 00:14:02 घंटे
साम्पातिक काल _____: 04:38:11 घंटे
सूर्योदय _____: 06:40:55 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:25:53 घंटे
दिनमान _____: 10:44:58 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: हेमन्त
सूर्य के अंश _____: 06:08:11 वृश्चिक
लग्न के अंश _____: 17:42:47 सिंह

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: सिंह - सूर्य
राशि-स्वामी _____: मेष - मंगल
नक्षत्र-चरण _____: अश्विनी - 4
नक्षत्र स्वामी _____: केतु
योग _____: व्यतिपात
करण _____: तैत्तिल
गण _____: देव
योनि _____: अश्व
नाड़ी _____: आद्य
वर्ण _____: क्षत्रिय
वश्य _____: चतुष्पाद
वर्ग _____: मृग
युँजा _____: पूर्व
हंसक _____: अग्नि
जन्म नामाक्षर _____: ला-लाखन
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: रजत - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: धनु

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1929	मार्गशीर्ष	2
पंजाबी	संवत : 2064	मार्गशीर्ष	8
बंगाली	सन् : 1414	मार्गशीर्ष	7
तमिल	संवत : 2064	कार्तिक	7
केरल	कोल्लम : 1183	वृश्चिक	7
नेपाली	संवत : 2064	मार्गशीर्ष	8
चैत्रादि	संवत : 2064	कार्तिक	शुक्ल 14
कार्तिकादि	संवत : 2064	कार्तिक	शुक्ल 14

पंचांग

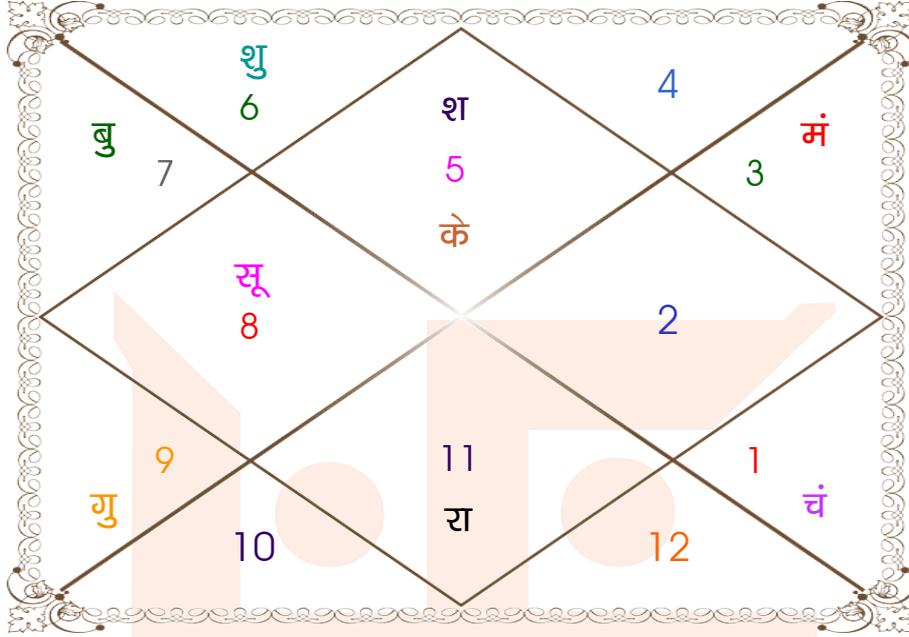
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 12
तिथि समाप्ति काल _____ : 07:12:24
जन्म तिथि _____ : 13
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : रेवती
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 08:10:41 घंटे
जन्म योग _____ : अश्विनी
सूर्योदय कालीन योग _____ : व्यतिपात
योग समाप्ति काल _____ : 24:56:15 घंटे
जन्म योग _____ : व्यतिपात
सूर्योदय कालीन करण _____ : बालव
करण समाप्ति काल _____ : 07:12:24 घंटे
जन्म करण _____ : तैतिल
भयात _____ : 41:38:20
भभोग _____ : 52:59:18
भोग्य दशा काल _____ : केतु 1 वर्ष 6 मा 3 दि

घात चक्र

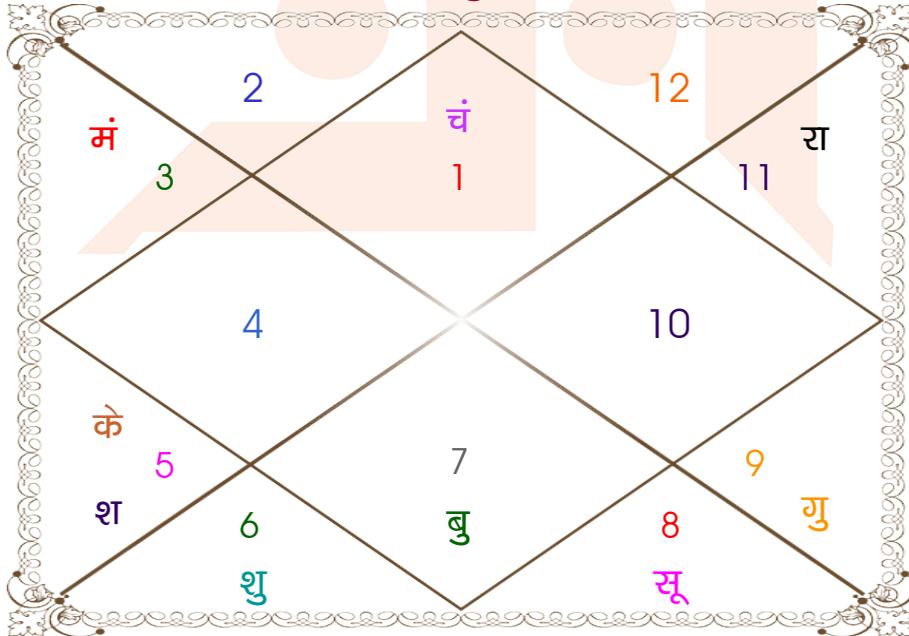
मास _____ : कार्तिक
तिथि _____ : 1-6-11
दिन _____ : रविवार
नक्षत्र _____ : मघा
योग _____ : विष्कुम्भ
करण _____ : बव
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : सिंह
लग्न _____ : मेष
सूर्य _____ : कर्क
चन्द्र _____ : मेष
मंगल _____ : सिंह
बुध _____ : वृष
गुरु _____ : कन्या
शुक्र _____ : तुला
शनि _____ : मिथुन
राहु _____ : वृश्चिक

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

	चं		मं
रा			
			के ल श
गु	सू	बु	शु

लग्न कुंडली

		चं	
मं			रा
श के	ल		गु
	शु	बु	सू

विंशोत्तरी
केतु 1वर्ष 6मा 3दि
केतु

23/11/2007

28/05/2122

केतु	26/05/2009
शुक्र	26/05/2029
सूर्य	27/05/2035
चन्द्र	26/05/2045
मंगल	26/05/2052
राहु	27/05/2070
गुरु	27/05/2086
शनि	27/05/2105
बुध	28/05/2122

योगिनी

भामरी 0वर्ष 10मा 10दि
सिद्धा

03/10/2019

03/10/2026

सिद्धा	11/02/2021
संकटा	02/09/2022
मंगला	12/11/2022
पिंगला	03/04/2023
धान्या	03/11/2023
भामरी	13/08/2024
भद्रिका	03/08/2025
उल्का	03/10/2026

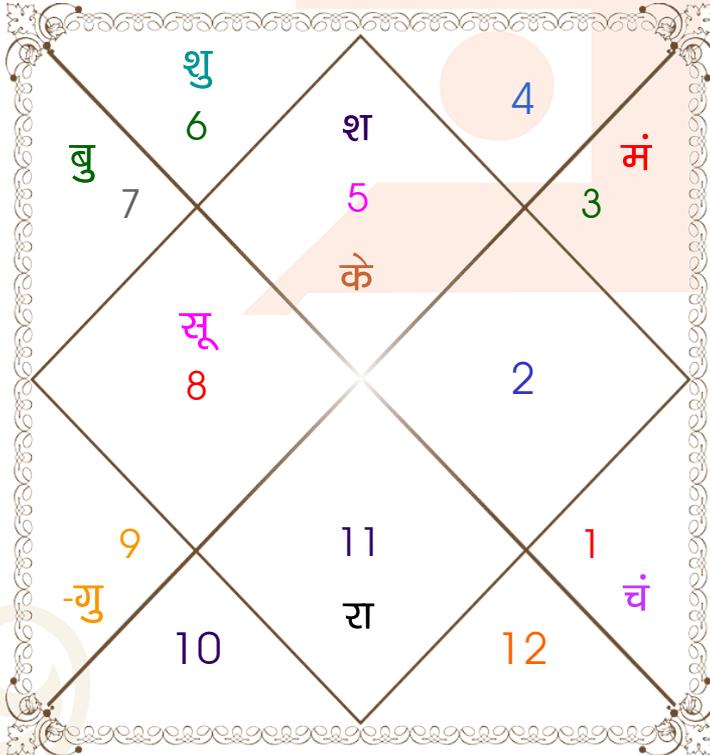
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			सिंह	17:42:47	321:35:09	पू०फाल्गुनी	2	11	सूर्य	शुक्र	मंगल	---
सूर्य			वृश्चि	06:08:11	01:00:36	अनुराधा	1	17	मंगल	शनि	बुध	मित्र राशि
चंद्र			मेष	10:27:37	15:10:04	अश्विनी	4	1	मंगल	केतु	शनि	सम राशि
मंगल	व		मिथु	18:05:16	00:06:22	आर्द्रा	4	6	बुध	राहु	सूर्य	शत्रु राशि
बुध			तुला	22:26:13	01:32:41	विशाखा	1	16	शुक्र	गुरु	शनि	मित्र राशि
गुरु			धनु	00:10:45	00:13:04	मूल	1	19	गुरु	केतु	केतु	मूलत्रिकोण
शुक्र			कन्या	21:22:07	01:07:45	हस्त	4	13	बुध	चंद्र	शुक्र	नीच राशि
शनि			सिंह	13:56:24	00:02:54	पू०फाल्गुनी	1	11	सूर्य	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि
राहु	व		कुंभ	08:48:46	00:09:35	शतभिषा	1	24	शनि	राहु	गुरु	मित्र राशि
केतु	व		सिंह	08:48:46	00:09:35	मघा	3	10	सूर्य	केतु	गुरु	शत्रु राशि
हर्ष	व		कुंभ	20:48:22	00:00:05	पू०भाद्रपद	1	25	शनि	गुरु	गुरु	---
नेप			मक	25:24:57	00:00:45	धनिष्ठा	1	23	शनि	मंगल	राहु	---
प्लूटो			धनु	03:45:21	00:02:01	मूल	2	19	गुरु	केतु	चंद्र	---
दशम भाव			वृष	17:08:36	--	रोहिणी	--	4	शुक्र	चंद्र	शनि	--

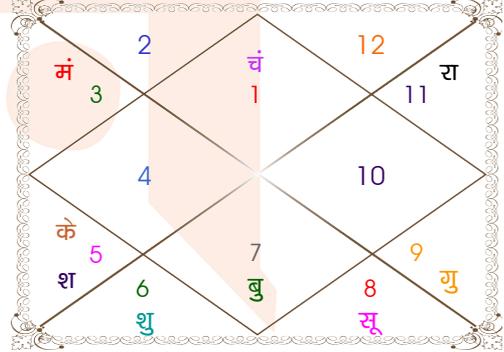
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:58:08

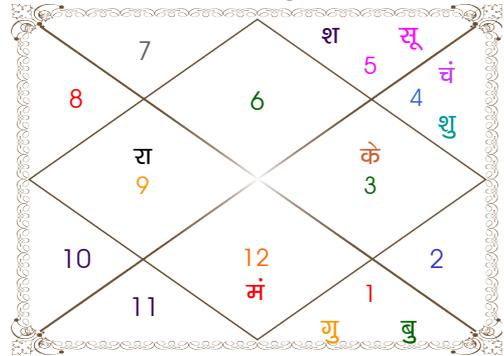
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	सिंह 02:37:05	सिंह 17:42:47
2	कन्या 02:37:05	कन्या 17:31:23
3	तुला 02:25:42	तुला 17:20:00
4	वृश्चिक 02:14:18	वृश्चिक 17:08:36
5	धनु 02:14:18	धनु 17:20:00
6	मकर 02:25:42	मकर 17:31:23
7	कुम्भ 02:37:05	कुम्भ 17:42:47
8	मीन 02:37:05	मीन 17:31:23
9	मेष 02:25:42	मेष 17:20:00
10	वृष 02:14:18	वृष 17:08:36
11	मिथुन 02:14:18	मिथुन 17:20:00
12	कर्क 02:25:42	कर्क 17:31:23

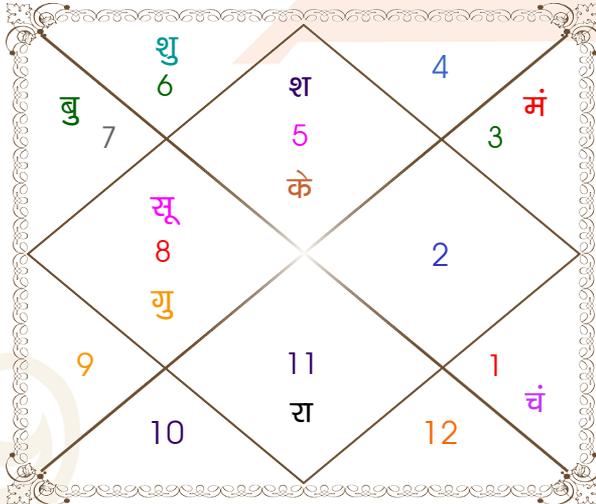
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	सिंह	17:42:47
2	कन्या	15:08:05
3	तुला	15:30:56
4	वृश्चिक	17:08:36
5	धनु	18:29:22
6	मकर	18:52:06
7	कुम्भ	17:42:47
8	मीन	15:08:05
9	मेष	15:30:56
10	वृष	17:08:36
11	मिथुन	18:29:22
12	कर्क	18:52:06

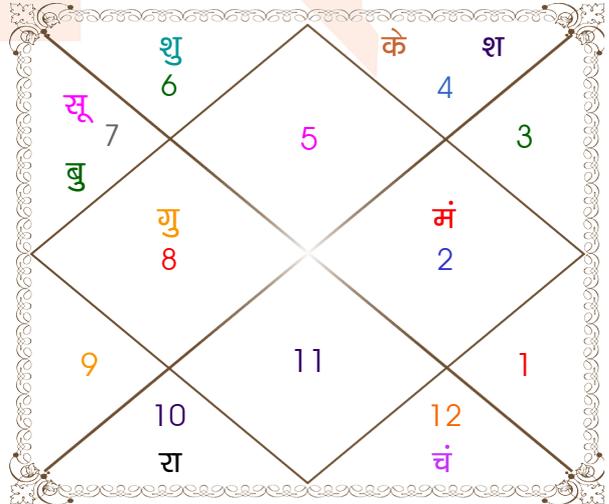
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती

चलित कुंडली



भाव कुंडली



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : केतु 1 वर्ष 6 मास 3 दिन

केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष
23/11/2007	26/05/2009	26/05/2029	27/05/2035	26/05/2045
26/05/2009	26/05/2029	27/05/2035	26/05/2045	26/05/2052
00/00/0000	शुक्र 25/09/2012	सूर्य 13/09/2029	चंद्र 26/03/2036	मंगल 23/10/2045
00/00/0000	सूर्य 25/09/2013	चंद्र 15/03/2030	मंगल 25/10/2036	राहु 10/11/2046
00/00/0000	चंद्र 27/05/2015	मंगल 21/07/2030	राहु 26/04/2038	गुरु 17/10/2047
00/00/0000	मंगल 26/07/2016	राहु 14/06/2031	गुरु 26/08/2039	शनि 25/11/2048
00/00/0000	राहु 27/07/2019	गुरु 01/04/2032	शनि 27/03/2041	बुध 22/11/2049
00/00/0000	गुरु 27/03/2022	शनि 14/03/2033	बुध 26/08/2042	केतु 20/04/2050
23/11/2007	शनि 26/05/2025	बुध 19/01/2034	केतु 27/03/2043	शुक्र 20/06/2051
शनि 29/05/2008	बुध 26/03/2028	केतु 27/05/2034	शुक्र 25/11/2044	सूर्य 26/10/2051
बुध 26/05/2009	केतु 26/05/2029	शुक्र 27/05/2035	सूर्य 26/05/2045	चंद्र 26/05/2052

राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष
26/05/2052	27/05/2070	27/05/2086	27/05/2105	28/05/2122
27/05/2070	27/05/2086	27/05/2105	28/05/2122	00/00/0000
राहु 06/02/2055	गुरु 14/07/2072	शनि 30/05/2089	बुध 24/10/2107	केतु 24/10/2122
गुरु 02/07/2057	शनि 25/01/2075	बुध 07/02/2092	केतु 20/10/2108	शुक्र 24/12/2123
शनि 08/05/2060	बुध 02/05/2077	केतु 17/03/2093	शुक्र 21/08/2111	सूर्य 30/04/2124
बुध 25/11/2062	केतु 08/04/2078	शुक्र 17/05/2096	सूर्य 27/06/2112	चंद्र 29/11/2124
केतु 14/12/2063	शुक्र 07/12/2080	सूर्य 29/04/2097	चंद्र 26/11/2113	मंगल 27/04/2125
शुक्र 14/12/2066	सूर्य 25/09/2081	चंद्र 28/11/2098	मंगल 23/11/2114	राहु 16/05/2126
सूर्य 07/11/2067	चंद्र 25/01/2083	मंगल 07/01/2100	राहु 12/06/2117	गुरु 21/04/2127
चंद्र 08/05/2069	मंगल 01/01/2084	राहु 14/11/2102	गुरु 18/09/2119	शनि 24/11/2127
मंगल 27/05/2070	राहु 27/05/2086	गुरु 27/05/2105	शनि 28/05/2122	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल केतु 1 वर्ष 5 मा 30 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - बुध 26/05/2025 26/03/2028	शुक्र - केतु 26/03/2028 26/05/2029	सूर्य - सूर्य 26/05/2029 13/09/2029	सूर्य - चंद्र 13/09/2029 15/03/2030	सूर्य - मंगल 15/03/2030 21/07/2030
बुध 20/10/2025 केतु 19/12/2025 शुक्र 10/06/2026 सूर्य 01/08/2026 चंद्र 26/10/2026 मंगल 25/12/2026 राहु 30/05/2027 गुरु 15/10/2027 शनि 26/03/2028	केतु 20/04/2028 शुक्र 30/06/2028 सूर्य 22/07/2028 चंद्र 26/08/2028 मंगल 20/09/2028 राहु 23/11/2028 गुरु 19/01/2029 शनि 27/03/2029 बुध 26/05/2029	सूर्य 01/06/2029 चंद्र 10/06/2029 मंगल 16/06/2029 राहु 03/07/2029 गुरु 18/07/2029 शनि 04/08/2029 बुध 19/08/2029 केतु 26/08/2029 शुक्र 13/09/2029	चंद्र 28/09/2029 मंगल 09/10/2029 राहु 05/11/2029 गुरु 30/11/2029 शनि 29/12/2029 बुध 23/01/2030 केतु 03/02/2030 शुक्र 06/03/2030 सूर्य 15/03/2030	मंगल 22/03/2030 राहु 10/04/2030 गुरु 27/04/2030 शनि 18/05/2030 बुध 05/06/2030 केतु 12/06/2030 शुक्र 03/07/2030 सूर्य 10/07/2030 चंद्र 21/07/2030
सूर्य - राहु 21/07/2030 14/06/2031	सूर्य - गुरु 14/06/2031 01/04/2032	सूर्य - शनि 01/04/2032 14/03/2033	सूर्य - बुध 14/03/2033 19/01/2034	सूर्य - केतु 19/01/2034 27/05/2034
राहु 08/09/2030 गुरु 22/10/2030 शनि 13/12/2030 बुध 28/01/2031 केतु 16/02/2031 शुक्र 12/04/2031 सूर्य 29/04/2031 चंद्र 26/05/2031 मंगल 14/06/2031	गुरु 23/07/2031 शनि 07/09/2031 बुध 19/10/2031 केतु 05/11/2031 शुक्र 24/12/2031 सूर्य 07/01/2032 चंद्र 01/02/2032 मंगल 18/02/2032 राहु 01/04/2032	शनि 26/05/2032 बुध 15/07/2032 केतु 04/08/2032 शुक्र 01/10/2032 सूर्य 18/10/2032 चंद्र 16/11/2032 मंगल 06/12/2032 राहु 27/01/2033 गुरु 14/03/2033	बुध 27/04/2033 केतु 16/05/2033 शुक्र 06/07/2033 सूर्य 22/07/2033 चंद्र 17/08/2033 मंगल 04/09/2033 राहु 20/10/2033 गुरु 01/12/2033 शनि 19/01/2034	केतु 26/01/2034 शुक्र 17/02/2034 सूर्य 23/02/2034 चंद्र 06/03/2034 मंगल 13/03/2034 राहु 01/04/2034 गुरु 18/04/2034 शनि 09/05/2034 बुध 27/05/2034
सूर्य - शुक्र 27/05/2034 27/05/2035	चंद्र - चंद्र 27/05/2035 26/03/2036	चंद्र - मंगल 26/03/2036 25/10/2036	चंद्र - राहु 25/10/2036 26/04/2038	चंद्र - गुरु 26/04/2038 26/08/2039
शुक्र 27/07/2034 सूर्य 14/08/2034 चंद्र 13/09/2034 मंगल 05/10/2034 राहु 28/11/2034 गुरु 16/01/2035 शनि 15/03/2035 बुध 06/05/2035 केतु 27/05/2035	चंद्र 21/06/2035 मंगल 09/07/2035 राहु 24/08/2035 गुरु 03/10/2035 शनि 21/11/2035 बुध 03/01/2036 केतु 20/01/2036 शुक्र 11/03/2036 सूर्य 26/03/2036	मंगल 08/04/2036 राहु 10/05/2036 गुरु 07/06/2036 शनि 11/07/2036 बुध 10/08/2036 केतु 23/08/2036 शुक्र 27/09/2036 सूर्य 08/10/2036 चंद्र 25/10/2036	राहु 16/01/2037 गुरु 30/03/2037 शनि 24/06/2037 बुध 10/09/2037 केतु 12/10/2037 शुक्र 11/01/2038 सूर्य 08/02/2038 चंद्र 25/03/2038 मंगल 26/04/2038	गुरु 30/06/2038 शनि 15/09/2038 बुध 23/11/2038 केतु 22/12/2038 शुक्र 13/03/2039 सूर्य 06/04/2039 चंद्र 17/05/2039 मंगल 14/06/2039 राहु 26/08/2039

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

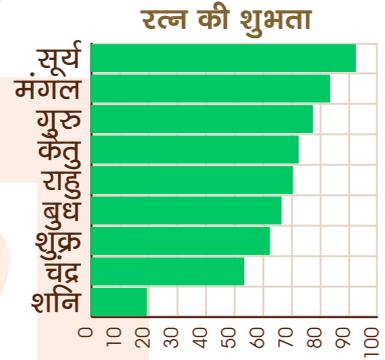
मूलांक	5
भाग्यांक	7
मित्र अंक	3, 5, 9, 7
शत्रु अंक	2, 4, 8
शुभ वर्ष	23,32,41,50,59
शुभ दिन	मंगल, रवि, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, सूर्य, गुरु
मित्र राशि	कर्क, धनु
मित्र लग्न	वृश्चिक, मेष, मिथुन
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	माणिक्य
शुभ उपरत्न	लाल हकीक, लाल तुर्मली
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	नारंगी
शुभ दिशा	पूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मूंगा, केसर, रक्तचन्दन
दान अन्न	गेहूँ
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
माणिक्य	सूर्य	92%	सुख, स्वास्थ्य
मूंगा	मंगल	83%	धनार्जन, भाग्योदय, सुख
पुखराज	गुरु	77%	सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव
लहसुनिया	केतु	72%	स्वास्थ्य, सुख
गोमेद	राहु	70%	दम्पति, स्वास्थ्य
पन्ना	बुध	66%	पराक्रम, धनार्जन, धन
हीरा	शुक्र	62%	धन, व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम
मोती	चंद्र	53%	भाग्योदय, कम खर्च
नीलम	शनि	19%	रोग, शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
केतु	26/05/2009	80%	31%	89%	66%	77%	69%	0%	58%	84%
शुक्र	26/05/2029	80%	31%	83%	72%	77%	75%	31%	77%	78%
सूर्य	27/05/2035	100%	59%	89%	66%	83%	50%	0%	58%	59%
चंद्र	26/05/2045	98%	66%	83%	72%	77%	62%	19%	58%	59%
मंगल	26/05/2052	98%	59%	95%	53%	83%	62%	19%	58%	78%
राहु	27/05/2070	80%	31%	70%	66%	77%	69%	31%	83%	59%
गुरु	27/05/2086	98%	59%	89%	53%	89%	50%	19%	70%	72%
शनि	27/05/2105	80%	31%	70%	72%	77%	69%	44%	77%	59%
बुध	28/05/2122	98%	31%	83%	78%	77%	69%	19%	70%	72%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-26/01/2017 21/06/2017-26/10/2017	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	29/03/2025-03/06/2027 20/10/2027-23/02/2028	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	03/06/2027-20/10/2027 23/02/2028-08/08/2029 05/10/2029-17/04/2030	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029 17/04/2030-31/05/2032	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	14/05/2054-02/09/2054 05/02/2055-07/04/2057	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	27/05/2059-11/07/2061 13/02/2062-07/03/2062	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/08/2063-06/02/2064 09/05/2064-13/10/2065 03/02/2066-03/07/2066	-----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	05/02/2073-31/03/2073 23/10/2073-16/01/2076 11/07/2076-11/10/2076	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	20/03/2084-21/05/2086 21/05/2086-08/02/2087	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	21/05/2086-21/05/2086 08/02/2087-18/07/2088 31/10/2088-05/04/2089	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	18/07/2088-31/10/2088 05/04/2089-19/09/2090 25/10/2090-21/05/2091	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/07/2093-18/08/2095	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया

फल

अशुभ
अशुभ
सम
शुभ
अशुभ

क्षेत्र

सुख हानि
दुर्घटना से बचाव
बदनामी
व्यावसायिक उन्नति
व्यय

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है यह भाव आय समृद्धि आदि का प्रतिनिधि भाव है अतः इसके प्रभाव से आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही आपके आय स्रोत भी एक से अधिक रहेंगे। जीवन में जमीन जायदाद से भी आप युक्त होंगे तथा इसके क्रय विक्रय से यथोचित लाभ प्राप्त करेंगे। समाज में आप एक प्रतिष्ठित व्यक्ति रहेंगे तथा सभी लोग आपको उचित आदर प्रदान करेंगे। आपको किसी विशिष्ट सम्मान की भी प्राप्ति होगी एवं धनऐश्वर्य से युक्त रहकर आप अपना जीवन यापन करेंगे।

एकादश भाव से द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आपकी पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य परस्पर तनाव का वातावरण रहेगा लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। साथ ही वाणी में भी यदा कदा कठोरता रहेगी एवं प्रारंभिक शिक्षा अर्जित करने में आपको समस्याओं का सामना करना पड़ेगा तथा परिश्रम पूर्वक आप इसमें सफलता प्राप्त करेंगे। पंचम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से संतति से आप युक्त रहेंगे लेकिन संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब हो सकता है साथ ही उनसे आपको जीवन में सुख एवं सहयोग सामान्य रूप से ही प्राप्त होगा। उच्च शिक्षा को आप परिश्रम पूर्वक अर्जित करेंगे तथा सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपके अच्छे संबंध रहेंगे एवं उनसे न्यूनाधिक मात्रा में सहयोग मिलता रहेगा। षष्ठ भाव में मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शत्रुवर्ग को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही किसी प्रतियोगी परीक्षा मुकदमे या चुनाव आदि में आप सफलता अर्जित करेंगे। शरीर यदा कदा गर्मी पित्त या रक्त विकार आदि से सामान्य अस्वस्थ हो सकता है। लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। इसके साथ ही मामा आदि से भी आपके विशेष संबंधों में अल्पता रहेगी तथा उनसे जीवन में सुख एवं सहयोग भी अल्प मात्रा में प्राप्त होगा।

इस प्रकार आप धनऐश्वर्य एवं वैभव से युक्त होकर प्रसन्नता पूर्वक अपना सांसारिक जीवन व्यतीत करेंगे तथा यत्न पूर्वक पारिवारिक जनों का आधुनिक परिवेश में लालन पालन करेंगे जिससे आपसे वे सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे इच्छित सहयोग एवं सुख प्राप्त करेंगे। अतः आपका दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा एवं आपसी संबंधों में भी सहयोग का भाव विद्यमान रहेगा।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृओं का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- नवम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।
- त्रिक भाव का स्वामी लग्न में स्थित है और उस पर शनि और राहु का प्रभाव है।

आपकी कुण्डली में मंगल के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



ग्रह फल

सूर्य

चतुर्थभाव में सूर्य हो तो जातक परमसुन्दर, कठोर, पितृधननाशक, चिन्तास्त, भाईयों से वैर करने वाला, गुप्तविद्या प्रिय एवं वाहन सुखहीन होता है।

वृश्चिक राशि में रवि हो तो जातक साहसी, लोभी, चिकित्सक, लोकमान्य, क्रोधी उद्योगी, उदररोगी, पुलिस अधिकारी एवं सेना में उच्चपद प्राप्त करने वाला होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य चतुर्थ भाव में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय होंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपका यत्नपूर्वक सहयोग करते रहेंगे। पिता से आपको धन, वाहन तथा अन्य प्रकार से सम्पत्ति अर्जित करते रहेंगे। इसके साथ ही नौकरी तथा व्यापार में भी आप उनसे सहयोग प्राप्त करते रहेंगे तथा उन्हीं के सहयोग से उन्नति भी करेंगे।

आप के मन में उनके प्रति सम्मान एवं आदर का भाव विद्यमान रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन में भी रुचि रहेगी। आपके परस्पर मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु वह क्षणिक रहेगा। इसके अतिरिक्त जीवन में आप हमेशा उनके सुख दुःख का भी ध्यान रखेंगे तथा अवसरानुकूल वांछित सहायता भी प्रदान करेंगे।

चन्द्र

नवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान्, विद्याप्रिय, चंचल, न्यायी, प्रवास-प्रिय, कार्यशील, धर्मात्मा. सन्तति-सम्पत्तियुक्त सुखी, साहसी एवं अल्पभातृवान् होता है।

मेष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक स्थिर सम्पत्तिवान्, शूर, दृढ़ शरीरवाला, बन्धुहीन, कामी, उतावला, जलभीरु, यात्रा करने का शौकीन, आत्माभिमानी एवं साहसी होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति नवम भाव में है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। आपके शुभ प्रभाव से उनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपकी सुख संसाधनों के प्रति वे चिन्तित रहेंगी तथा प्रयत्न पूर्वक आपको इन सुख संसाधनों का उपभोग करायेंगी। साथ ही आपके भाग्य की उन्नति में भी उनका विशेष योगदान रहेगा। इसके अतिरिक्त उन्हीं की सहायता एवं सहयोग से आप आवश्यक सुखसंसाधनों को भी प्राप्त करेंगे।

आप भी उनके आज्ञाकारी होंगे तथा पूर्ण रूप से उनका हार्दिक सम्मान करेंगे। जीवन में उनको पूर्ण सुख सुविधा प्रदान करने के लिए आप यत्नशील रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर होंगे तथा यदा कदा ही कोई मतभेद रहेंगे अन्यथा एक दूसरों से सहमत ही रहेंगे। इस प्रकार आप एक दूसरों के लिए सामान्य शुभ रहेंगे।

मंगल

ग्यारवें भाव में मंगल हो तो जातक धैर्यवान्, न्यायवान्, प्रवासी, साहसी, लाभ करने वाला, क्रोधी, झगड़ालू, दम्भी एवं कटुभाषी होता है।

मिथुन राशि में मंगल हो तो जातक शिल्पकार, परदेशवासी, कार्यदक्ष, सुखी, जनहितैषी, विद्वान, बलवान शरीर, कवि, संगीतकार, नीतिज्ञ, कुशाबुद्धिवाला एवं चतुर होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की वे अनुभूति करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में अवसरानुकूल आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप आय के साधनों की वृद्धि करने में भी उनसे सहायता अर्जित करेंगे। आप को सुख दुःख में उनसे पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा वे आप पर विश्वास करेंगे।

आप भी हृदय से उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे तथा समयानुसार उनको आर्थिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही उनकी आय की वृद्धि में भी आप वांछित सहयोग देंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह स्थाई रहेगी एवं कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

बुध

तृतीयभाव में बुध हो तो जातक सद्गुणी, कार्यदक्ष, परिश्रमी, मित्रप्रेमी, भीरु, धर्मात्मा, यात्राशील, व्यवसायी, चंचल, अल्पभातृवान्, विलासी, सन्ततिवान्, कवि, सम्पादक, सामुद्रिकशास्त्र का ज्ञाता एवं लेखक होता है।

तुला राशि में बुध हो तो जातक आस्तिक, व्यापार दक्ष, वक्ता, चतुर, शिल्पज्ञ, कुटुम्बवत्सल, उदार, अच्छा अन्तर्ज्ञान, वफादार, विनीत संतुलित मन एवं दार्शनिक होता है।

गुरु

पंचमभाव में गुरु हो तो जातक नीतिविशारद, सन्ततिवान्, सटटे से धन प्राप्त करने वाला, कुलश्रेष्ठ, लोकप्रिय, कुटुम्ब में सबसे ऊँचा स्थान, ज्योतिषी एवं आस्तिक होता है।

धनु राशि में गुरु हो तो जातक धनी, प्रभावशाली, विद्वान्, विश्वस्त, सज्जन, दानशील संगठनकर्ता, अच्छा वक्ता, धर्माचार्य, दम्भी, रतिप्रेमी एवं धूर्त होता है।

शुक्र

द्वितीयभाव में शुक्र हो तो जातक भाग्यवान्, साहसी, समयज्ञ,

मिष्टान्नभोजी, यशस्वी, लोकप्रिय, जौहरी, दीर्घजीवी, कवि, कुटुम्बयुक्त, सुखी एवं धनवान् होता है।

कन्या राशि में शुक हो तो जातक, सुखी, भोगी, अतिकामी, सभापण्डित, रोगी, वीर्यहीन, सट्टे द्वारा धननाशक एवं अवैध सम्बन्ध रखने वाला होता है।

शनि

लग्न (प्रथम) में शनि मकर, कुम्भ तथा तुला का हो तो धनाढ्य, सुखी, धनु और मीन राशियों में हो तो अत्यन्त धनवान् और सम्मानित एवं अन्य राशियों का हो तो अशुभ होता है।

सिंह राशि में शनि हो तो जातक लेखक, अध्यापक, कार्यदक्ष, हठी, कमसन्तान, अभागा एवं ईर्ष्यालु स्वभाव वाला होता है।

राहु

सप्तम भाव में राहु हो तो चतुर, लोभी, दुराचारी, दुष्कर्मी वातरोगजनक, भ्रमणशील, व्यापार से हानिदायक एवं स्त्रीनाशक होता है।

कुम्भ राशि में राहु हो तो जातक विद्वान्, लेखक मितभाषी एवं मितव्ययी होता है।

केतु

लग्न (प्रथम) में केतु हो तो जातक चंचल मूर्ख दुराचारी, भीरु तथा वृश्चिक राशि में हो तो सुखकारक, धनी एवं परिश्रमी होता है।

सिंह राशि में केतु हो तो जातक बहुभाषी, डरपोक, असहिष्णु, सर्पदशन का भय एवं असन्तोषी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- शुक्र
(26/05/2009 - 26/05/2029)

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 26/05/2009 को आरम्भ होकर 26/05/2029 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में शुक्र द्वितीय भाव में है। यह एक शुभ ग्रह है जिसकी सामान्यतया दो राशियाँ हैं- वृष और तुला। इसकी मूल त्रिकोण राशि तुला है। यह मीन राशि में उच्च का तथा कन्या राशि में निम्न का होता है। यह आनन्द, प्रेम-संबंध, स्वाद तथा फैशन डिजाइनिंग का द्योतक है। यह आपकी कुण्डली में द्वितीय भाव में स्थित है तथा इसकी अष्टम भाव पर दृष्टि है और इस भाव पर शुभ प्रभाव डाल रहा है। द्वितीय भाव धन, लाभ, जगत्व्यापी यश, अधिकार, दाहिना नेत्र, याददाश्त, कल्पना शक्ति, जिह्वा, दाँत, ठोड़ी तथा पारिवारिक सदस्य का द्योतक है। यह मृत्यु का भाव या मारक स्थान भी कहलाता है।

स्वास्थ्य :

महादशेश शुक्र द्वितीय भाव, जो धन, परिवार, तथा जगत्व्यापी स्रोत का द्योतक है, द्वितीय भाव में स्थित है तथा इस भाव को बली कर रहा है जिसके फलस्वरूप इस दशा काल में आपके साथ कोई बड़ी घटना या दुर्घटना नहीं होगी।

अर्थ संपत्ति :

इस दशा काल में, जो आपके पक्ष में है, आपको चल तथा अचल संपत्ति अर्जित करने का अवसर मिलेगा। आपके व्यय में वृद्धि हो सकती है। स्त्री से या विवाह से तथा दूरों के सहयोग से भी धन की प्राप्ति होगी।

व्यवसाय :

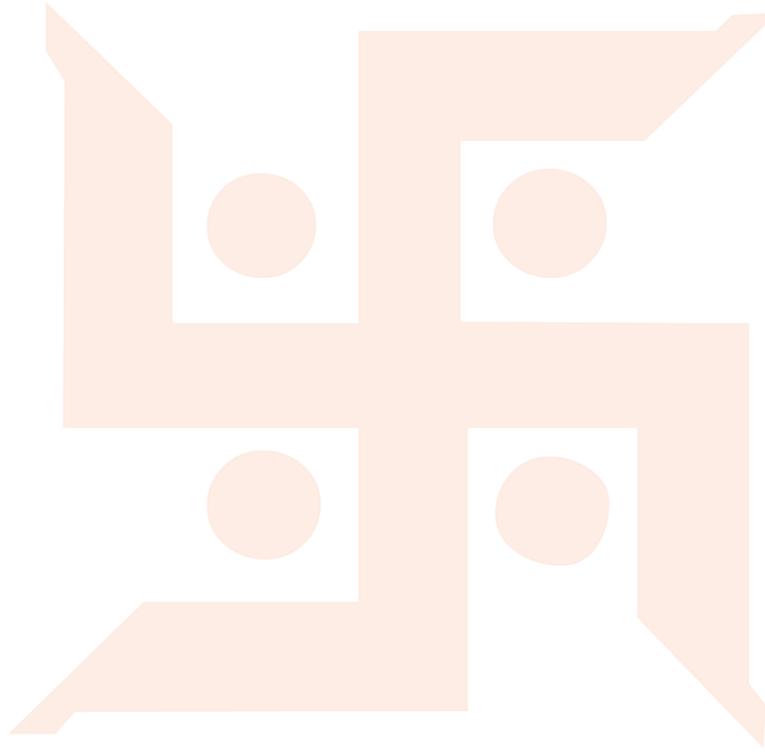
आप व्यावसायिक स्तर पर सुभ्यस्त रहेंगे तथा वही व्यवसाय अपनाएंगे जिसमें आप उन्नति कर सकते हैं। नौकरी में पदोन्नति के कुछ अवसर मिलेंगे और इस प्रकार आप अपने भविष्य में उन्नति करेंगे। आपको क्रियात्मकता या फैशन डिजाइनिंग से संबंधित काम करने के कुछ अवसर मिल सकते हैं।

पारिवारिक जीवन :

आपको विवाह में या जीवन साथी से धन की प्राप्ति होगी। आपका पारिवारिक जीवन बहुत ही सफल तथा खुशहाल होगा। आपके जीवन साथी आपका बहुत ही सहयोग करेंगे तथा आपका पारिवारिक जीवन बहुत उत्साहपूर्ण होगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

यह दशा काल आपकी शैक्षिक तथा प्रशिक्षण गतिविधियों के लिए शुभ होगा।



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

महादशा :- सूर्य
(26/05/2029 - 27/05/2035)

सूर्य की महादशा 26/05/2029 को आरम्भ होगी और 6 वर्ष की अवधि के बाद 27/05/2035 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य चतुर्थ भाव में स्थित है। सूर्य यश, प्रतिष्ठा, शासकीय कृपा, उच्चाधिकार तथा सामान्य सफलता का प्रतिनिधित्व करता है और चतुर्थ भाव माता, धन गाड़ी और पारिवारिक खुशी को सूचित करता है। अतः इस दशा में आप को धन-सम्पत्ति और गाड़ी की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

आप सतत् उत्साही और क्रियाशील रहेंगे। किन्तु आपको अधिक परिश्रम तथा उत्तेजना से बचने का प्रयास करना चाहिए क्योंकि इनके कारण आपको रक्तचाप तथा हृदय-वेदना जैसी स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। किन्तु उचित उपाय से इससे बचा जा सकता है। सम्बन्धियों के साथ संबंधों में तनाव के कारण मानसिक शान्ति में कमी हो सकती है।

अर्थ :

इस दशा के दौरान आपको धन की प्राप्ति होगी। आपको अचल तथा पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपको इस अवधि में यातायात से लाभ होगा। आपको भूमि तथा भवन की प्राप्ति और भूमि-उत्पाद से लाभ होगा। इस दशा में सट्टे का परित्याग करें क्योंकि यह लाभदायक नहीं होगा।

व्यवसाय :

दशम भाव पर सूर्य की दृष्टि जीवन-वृत्ति के लिये अत्यंत शुभ है। उन्नति, शक्ति तथा अधिकार प्राप्ति की सम्भावना है। आपको शासन अथवा अन्य उच्च प्राधिकारों से मान्यता प्राप्त हो सकती है। आप अपने सभी कार्यों में सफल होंगे। आपको अपने उच्चाधिकारियों से सद्भाव तथा सहयोग मिलेगा। आप प्रशासनिक कार्यों में श्रेष्ठ रहेंगे। आपको नौकरी में पदोन्नति मिलेगी और आमदनी तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। व्यवसायियों को साझेदारी के व्यवसाय में लाभ मिलेगा। इस दशा में आप कुछ अनुबन्ध कर सकते हैं। व्यवसाय से सम्बन्ध यात्रा हो सकती है। इस दशा में व्यवसाय के क्षेत्र में आपकी आकांक्षाओं की पूर्ति हो सकती है।

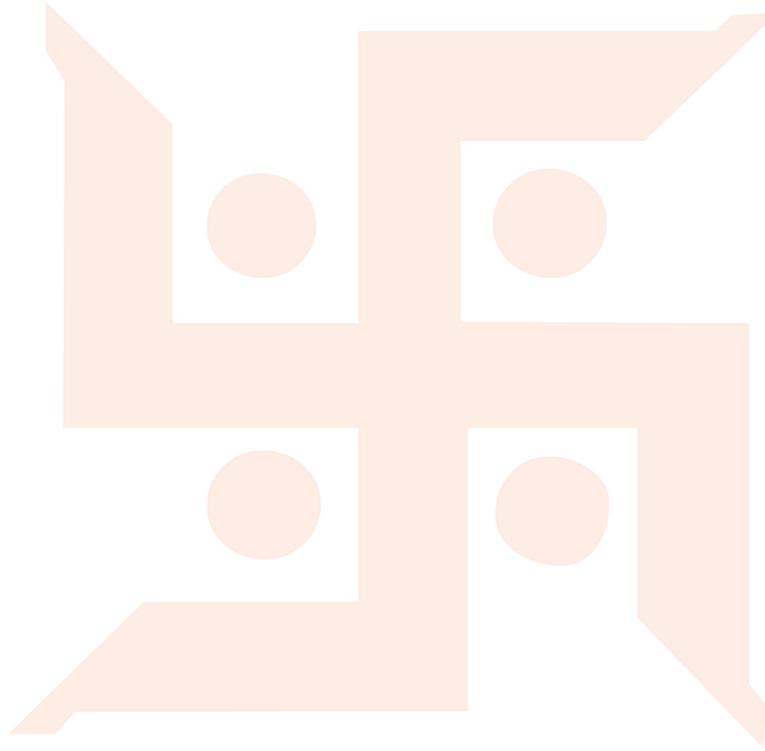
पारिवारिक जीवन :

यदि आप अपनी इच्छाओं को दूसरों पर आरोपित न करें तो आपको पारिवारिक सुख मिलेगा। आप समाज के प्रति निष्ठा रखते हैं और उदार हैं। आपके अनेक मित्र हैं, किन्तु आप स्वच्छन्द हैं और आपकी इच्छाशक्ति अत्यन्त प्रबल है जिससे आपको कभी-कभी विरोध का सामना करना पड़ सकता है। सन्तानों से सम्बन्ध में कभी-कभी तनाव उत्पन्न हो सकते हैं। आपके जीवन साथी को समृद्धि, कार्य के अच्छे अवसर, यश, प्रतिष्ठा, शक्ति, अधिकार आदि की प्राप्ति होगी। आपकी माता के स्वास्थ्य को देख-रेख की जरूरत है। आपको पैतृक सम्पत्ति तथा पिता से लाभ की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को इस अवधि में लाभ मिलेगा और

उनके रुके हुए कार्य पूरे होंगे। बड़े भाई-बहनों का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, उन्हें अपने कार्यों में सफलता तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी। उनके साथ आपके सम्बन्ध मधुर रहेंगे।

शिक्षा :

आपका आकर्षण वेदान्त-दर्शन अथवा आध्यात्मिक विषयों की ओर हो सकता है। आपका समय धार्मिक कार्यों में व्यतीत होगा। आपकी विज्ञान के सभी विषयों में रुचि होगी।



अंतर्दशा :- सूर्य - सूर्य
(26/05/2029 - 13/09/2029)

आपके लिए सूर्य की महादशा 26/05/2029 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 3 मास 18 दिन होकर 13/09/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा का स्वामी सूर्य पिता, अधिकार, शक्ति, नाम, प्रसिद्धि, ऊर्जा और आत्मा का कारक है।

इस अंतर्दशा में आप सत्ता और अधिकार का सुख भोगेंगे। आप में परियोजनाओं को पूर्ण करने के लिए पर्याप्त क्षमता और ऊर्जा रहेगी। आप जमीन, जायदाद प्राप्त करेंगे या क्रय करेंगे। खेती और मकान के किराये से अच्छी आमदनी होगी। किरायेदारों से विवाद आपके पक्ष में समाप्त हो जाएगा। आपके जीवनसाथी अपने कार्य में तरक्की करेंगे और नाम कमाएंगे।

इस अवधि में विरासत में धन और जायदाद प्राप्त हो सकते हैं। माता का व्यवहार सुखद रहेगा। पिता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। मामा के परिवारगण धन-धान्य से पूर्ण होंगे। संतान का पढ़ाई में मन कम लग सकता है, परंतु हाल ही में शिक्षा प्रारंभ करने वाले ठीक से पढ़ेंगे। उच्चतर कक्षाओं के विद्यार्थियों को अधिक परिश्रम करना चाहिए। दर्शनशास्त्र या गूढ़ विद्या में आपकी रुचि बढ़ सकती है। लोकप्रियता में वृद्धि होगी और प्रशासन से सम्मान प्राप्त होगा।

चिड़चिड़ेपन और आवश्यकता से अधिक मेहनत से बचें, क्योंकि इससे हृदयरोग या बुखार आदि हो सकते हैं। सूर्योदय के समय सूर्य नमस्कार करना लाभकारी है।

अंतर्दशा :- सूर्य - चन्द्र
(13/09/2029 - 15/03/2030)

आपकी सूर्य की महादशा 26/05/2029 को प्रारंभ हुई थी। इसमें दूसरी अंतर्दशा चंद्रमा की होगी जिसकी अवधि 6 मास है और यह 15/03/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र मष्तिष्क, घर, माता और सौंदर्य का कारक है।

इस अंतर्दशा की अवधि में आपका भाग्य चमकेगा। आप धनी और सुखी रहेंगे। पुश्तैनी जायदाद से लाभ होगा। माता-पिता से प्रसन्नता प्राप्त होगी। विद्या, लेखन, प्रकाशन और शोध से प्रसिद्धि मिल सकती है। लंबी यात्राओं से लाभ प्राप्त हो सकता है। धर्म और अध्यात्म में आपकी रुचि रहेगी।

भाई-बहनों के साथ संबंध मधुर रहेंगे। वरिष्ठ व्यक्तियों से लाभप्रद संबंध बन सकते हैं। संतान भाग्यशाली रहेगी। संतान का जन्म भी संभव है। आपके पिता के अधिकार और शक्ति बढ़ेंगे। बड़े भाई-बहनों के धन में वृद्धि होगी। विद्यार्थीगणों के ज्ञान का दायरा बढ़ेगा।

इस अंतर्दशा में सफलता, आय, प्रभाव, शुभ उत्सव, मान, सम्मान, शत्रुओं पर विजय, स्वास्थ्य आदि में प्रगति होगी। शुभत्ववर्धन हेतु श्वेत वस्तुओं का दान करें।

**अंतर्दशा :- सूर्य - मंगल
(15/03/2030 - 21/07/2030)**

आपकी सूर्य की महादशा 26/05/2029 को प्रारंभ हो रही है। इसमें तृतीय अंतर्दशा मंगल की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन है। यह अंतर्दशा 21/07/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, ऊर्जा और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में आपको मित्रों से लाभ प्राप्त होगा। साहस, प्रसन्नता और धन की वृद्धि होगी। व्यवसाय/कार्य, सरकार, मातहतों और शुभेच्छुओं से लाभ प्राप्त होगा। मुकदमें में विजय प्राप्त होगी। प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी। धन सरलता से आएगा। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शत्रुओं पर विजय होगी।

आपके जीवनसाथी या व्यापार में साझेदार की मेहनत की कमाई में वृद्धि होगी। आपके पिता की लघु यात्राएं हो सकती हैं। माता को जायदाद प्राप्त हो सकती हैं। छोटे भाई-बहनों की लंबी यात्राएं हो सकती हैं। बड़े भाई-बहनों को सफलता मिलेगी। सेवारत जातक विरोधियों को परास्त कर देंगे। परामर्शदाता मेहनत से धन कमाएंगे। व्यापारीगण व्यस्त रहेंगे। आपके बच्चे सक्रिय और स्फूर्तिवान रहेंगे और पढ़ाई में प्रगति करेंगे। अगर वे सेवाकार्य में हैं तो प्रगति करेंगे।

मामूली व्याधियां जैसे बायां कान या बायें ऊपरी अंग के रोग, ज्वर, घाव आदि आपको परेशान कर सकते हैं। शुभत्व में वृद्धि के लिए लाल वस्तुओं का दान दें।

**अंतर्दशा :- सूर्य - राहु
(21/07/2030 - 14/06/2031)**

आपके लिए सूर्य की महादशा 26/05/2029 को प्रारंभ हुई थी। इसमें चतुर्थ अंतर्दशा राहु की होगी। यह 21/07/2030 को प्रारंभ होकर 14/06/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक सुख, दादा और तीर्थयात्रा का कारक है।

इस अवधि में परिवार और जनता से व्यवहार में सावधानी आवश्यक है क्योंकि आप आत्मकेंद्रित हो सकते हैं। शत्रुओं पर विजयी रहेंगे। स्वास्थ्य उत्तम होगा। सकारात्मक व्यवहार के कारण प्रसिद्धि मिलेगी।

आपके पिता को धन का लाभ होगा। माता अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करेंगी। भाई-बहनों के लिए भी समय भाग्यशाली रहेगा। आपकी संतान को लक्ष्य की प्राप्ति के लिए परिश्रम करना होगा। उन में उत्साह भरपूर रहेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो धनागम बोनस, ग्रेच्युटी आदि से बढ़ेगा। परामर्शदाता भाग्यशाली रहेंगे। व्यापारी अधिक लाभ कमाएंगे और प्रतिस्पर्धियों को पीछे छोड़ देंगे।

उत्सर्जन तंत्र और अस्थियों की व्याधि से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए नीले वस्त्र और उड़द की दाल दान में दें।